महान-से-महान थीं दादी प्रकाशमणि

कोई व्यक्ति कितना महान है या किसे हम बड़ा आदमी कहें, इस प्रश्न का उत्तर किसी से व्यक्तिगत रूप से मिलने पर सहज मिल जाता है। महान वह है जिससे मिलकर हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करें। हमारा मन गदगद हो जाये। हम स्वयं को खुशनसीब समझने लगें, उस महान व्यक्ति के गुण व संस्कार हमारे हृदय-पटल को छू जायें और हम उन गुणों की सुवासित लहरों में गोता लगाते रहें। जिंदगी के ये मीठे अनुभव चिरस्मरणीय रहते हैं। आइये, इसी दृष्टि से हम दादी जी को देखें तो पायेंगे कि दादी महान-से-महान थीं। वे मानवता के उच्च शिखर पर पहुँच गई थीं। उनकी निर्मल, पवित्र एवं स्वच्छ आत्मा पर दाग का निशान भी शेष नहीं रह गया था। वे सम्पूर्ण कर्मातीत अवस्था को प्राप्त हो चुकी थीं। ज्ञान के अनुसार सम्पूर्ण कर्मातीत अवस्था को प्राप्त आत्मा, विकारों से उत्पन्न पुराने तन में नहीं रह सकती।

धैर्य और माधुर्य की मूर्ति दादी जी की आयु तो बड़ी थी परन्तु उनके चेहरे पर बच्चों जैसी अबोधता एवं सरलता थी। सत्यता के आकर्षण से परिपूर्ण उनकी रूहानी दृष्टि, नजर मिलते ही निहाल कर देती थी। सुन्दरतम् (परमात्मा) की सुन्दर रचना, सचमुच ही सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् (परमात्मा) के समान गुणों वाली बन गई थीं हमारी दादी। वे सत्यवादी थीं, कल्याणकारी थीं, अलौकिक सौन्दर्य की अथॉरिटी थीं। जिन्होंने साकार बाबा को प्रत्यक्ष में नहीं देखा, उन्हें देख उनके मुख से यही निकलता था, जिसकी रचना इतनी सुन्दर वह कितना सुन्दर होगा।

संसार के अनुभवी लोग कहते हैं कि प्रशासक के लिए थोड़ा सख्त होना ज़रूरी है। दादी ने इस धारणा को भी गलत साबित कर दिया। वे इतनी बड़ी विश्व व्यापक संस्था की प्रशासिका थीं परन्तु उन्होंने न कभी गुस्सा किया, न कोई सख्ती की। कभी ज़िद्द करके अपनी बात को सिद्ध नहीं किया। वे बहुत ही विनम्रतापूर्वक अपनी बात कहती थीं, प्रेमपूर्वक समझ देती थीं। उनकी निर्णय शक्ति कमाल की थी। आवश्यकता जब होती तो वे सही और निष्पक्ष निर्णय लेती थीं। संगठन को स्नेह के सूत्र में बाँधने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। वे सारे विश्व की समस्त आत्माओं को अपने रूहानी आँचल की शीतल छाया में समा लेना चाहती थीं। वे खुले दिल से सबको मधुबन आने का निमंत्रण देतीं, ताकि सभी आत्माएँ परमात्मा की कर्मभूमि पर आकर उनसे साकार और अव्यक्त मिलन मनाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकें। आगन्तुकों के ठहरने-रहने तथा सुख-सुविधाओं के लिए उन्होंने कई सुन्दर व विशाल इमारतों का निर्माण कराया जहाँ हज़ारों लोग रोज़ ज्ञान स्नान करते हुए सुख-शान्तिपूर्ण अलौकिक वातावरण का आनन्द लेते हैं। हर काम शान्तिपूर्वक और समय पर होता है। मधुबन का प्रशासन देखकर बड़े-बड़े उच्च पदासीन प्रशासक भी चकित रह जाते हैं तथा निमित्त प्रशासक की कुशाग्र बुद्धि की सराहना करते हैं। यह कार्य दादी जी अपनी आत्मशक्ति एवं साइलेंस की शक्ति से सरलतापूर्वक करती रहीं।

विलक्षण बुद्धि के साथ-साथ दादी जी की स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी। अपने उच्च पद की गरिमा का उन्हें ज़रा भी अहंकार नहीं था। विगत काल के ईश्वरीय सहयोगियों को वे नाम, रूप से जानती थीं और मिलने पर समुचित सम्मान देती थीं। बाबा के स्थापना के कार्य में किसने क्या किया, कैसे यज्ञ की मदद की इसकी वे भरे क्लास में चर्चा करतीं। उनका क्लास बड़ा

मनोरंजक होता था। वे बीच-बीच में हँसती-हँसाती रहती थीं।

अब से पचास वर्ष पूर्व दादी जी से मेरी पहली मुलाकात हुई थी। उस समय तो वे हमारी मीठी-प्यारी कुमारिका बहन थी। उस समय उनकी आयु कम थी। उनका साकार व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। मधुर मुसकान बिखेरते अधर-कमल, रूहानी नशे में मस्त मतवाले नयन, राजयोग की पावन सुगंध तथा दिव्यगुणों की गरिमा से परिपूर्ण जीवन – कुल मिलाकर बड़ा चुम्बकीय व्यक्तित्व था दादी का।

एक मुरली में बाबा के महावाक्य थे, अमूल्य हीरे को रखने के लिए डिब्बी भी सुन्दर, आकर्षक और अमूल्य होती है। सच बात है, परमात्मा ने जिस तन में (ब्रह्मा तन में) प्रवेश किया था, वह तन भी बहुत सुन्दर और आकर्षक था। दादी की आत्मा भी अमूल्य हीरा थी इसलिए प्रकृति ने उनकी तन रूपी डिब्बी भी बहुत सुन्दर बनाई थी। श्रद्धांजलि के लिए अनायास ही मुख से ये शब्द निकलते हैं –

तन भी सुन्दर, मन भी सुन्दर,
तुम दिव्यगुणों की खानी थीं।
बहुमूल्य मणि अमोलक,
प्रकाश-पुँज वरदानी थीं।

❑❑

यह रक्षा बंधन है प्यारे !

जो रक्षा करे वही धारे, यह रक्षा बंधन है प्यारे !
तू एक आत्मा अजर-अमर, साकार लोक में आ आकर
है आज स्वयं को भूल गया, सीढ़ी-दर-सीढ़ी उतर-उतर
तेरा स्वर्णिम इतिहास रहा, इतिहास वही तू पुन : जगा
तू आज स्वयं से परिचय कर, फिर परमपिता से योग लगा
पहले तू कर तो सभी करें, तू यही कर्म करता जा रे
जो रक्षा करे वही धारे, यह रक्षा बंधन है प्यारे !

यह जिसको बाँध दिया जाये, वह निज स्वधर्म में रह जाये
वह राग-द्वेष या सुख-दु :ख को एक भाव से सह जाये
इस धागे की मर्यादा है, आदि-सनातन गाथा है
यह धागा स्वयं बिना बोले, अपनी वह गाथा कह जाये
जिनने इसकी गरिमा समझी, वे बन जाते क्षण में न्यारे
जो रक्षा करे वही धारे, यह रक्षा बंधन है प्यारे !

दैवीगुण तेरे गहने हैं, तू उन गहनों की रक्षा कर
जो भी हैं दु :खी-अशान्त यहाँ, उन भातृजनों की रक्षा कर
शुभ संकल्पों के साथ आज, रक्षा करना ही धर्म तेरा
जो भी शोषित हैं, पीड़ित हैं, उन माँ-बहनों की रक्षा कर
उत्साह-उमंग उन्हें दे दे, जो सोये पड़े थके-हारे
जो रक्षा करे वही धारे, यह रक्षा बंधन है प्यारे !

आत्मा-आत्मा भाई-बहनें, कहता है यह रक्षा बंधन
कच्चे धागे से बँधा हुआ, पक्का है यह रक्षा बंधन
यह स्नेह-मिलन का सूचक है, यह पवित्रता का है प्रतीक
दुनिया के सब बंधन झूठे, सच्चा है यह रक्षा बंधन
दृष्टि, वृत्ति से और कृति से, पावन हों अब हम सारे
जो रक्षा करे वही धारे, यह रक्षा बंधन है प्यारे !

– ब्रह्माकुमार देवनारायण मिश्र, महेन्द्र नगर (नेपाल)